Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 10/March/2025 IJRAW: 2025; 4(4):117-119 Accepted: 17/April/2025

सरगरा समाज के व्रत सम्बन्धी लोकगीतों का परिचय

*[1]भारती पंवार

*[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश

वैज्ञानिक दृष्टि से देखे तो विज्ञान भी इस तथ्य को स्वीकार करता है कि मनुष्य को सप्ताह में एक दिन निराहार रहकर अपने शरीर के पाचन तंत्र को बेहतर बनाना चाहिए और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करना चाहिए। ऐसे में हम सनातन काल से व्रत व उपवास की इस परम्परा को मिथ्या नही कह सकते है, ये हमारे शरीर एवं मन दोनो के लिए हितकारी है इसी परम्परा को सरगरा समाज के लोग निर्वहन करते हुए आ रहे है, अतः हर काल खण्ड में व्रतों व उपवास का जीवन लोक जीवन से जुडा होना वास्तव में देखा जाए तो उस संस्कृति में इसकी महत्ती आवश्यकता बन गई है।

मुख्य शब्दः सतगुरू वामन अवतार, पावड़ा–तीन पैर, अदमण, ठाकुर पावणा।

प्रस्तावना

ऐसा सत्य जो हमेशा रहे किसी काल परिस्थिति में जिसका अन्त न हो हमेंशा शाश्वत रहे उसे वैदिक या सनातन धर्म कहते है, वैदिक अर्थात वेदो से जुडा हुआ उसे श्रृति भी कहा जाता है, हमारे ऋषि–मुनियों ने इन्हीं श्रृति या वैदिक धर्म को वेद, पुराण, स्मृति आदि अनेक ग्रंन्थों में आत्मसात करके मानव कल्याण के लिए सरक्षित किया है।

वैदिक धर्म ग्रंन्थों में सुख की प्राप्ति और दुख की निवृति के लिए कई मार्ग बताए है, उन्हीं में से एक व्रत व उपवास है, संसार के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में व्रत को महत्व दिया गया है।

किसी कार्य को पूरा करने का संकल्प लेकर पूरे दिन अन्न, जल या भोजन तथा निराहार रहकर कर्म करना ही व्रत है, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, मास, ऋतु, योग आदि के विधान द्वारा व्रत किया जाता है कोई भी व्रत किसी संकल्प को लेकर किया जाता है तो विधि विधान से उसका अनुष्ठान करवाना भी आवश्यक होता है जिससे उसके निमित फल की प्राप्ति हो सके।

व्रत का लौकिक महत्व यह भी है कि वह लौकिक और परलौकिक उद्धेश्यों को प्राप्त करने में भी सहायक होते है तथा मनुष्य को अपने कर्म सुधारने की प्रेरणा देता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और बिना समाज के मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं है अतः इस लोक जीवन में प्रकृति के प्रति वैयत्तिक ही नहीं, अपितु सामाजिक संबंध भी रहता है। [1]

कृषि–कर्म, ऋतु–परिवर्तन, देव पूजा, पशु–पूजा, प्रकृति पूजा और वीर पूजा से संबंधित अनेक उत्सव व त्यौहार के रूप में तथा गणगौर, लौरियौ, होली, घुंडलो आदि गीत जन–जन की मांगलिक कल्याण की भावनाओं पर आधारित होते है। [2]

विभिन्न अवसरो पर जो गीत गाए जाते है उन्हें ऋतुओं तथा व्रतों के क्रम में रखा जाता है। [3] लोक जीवन में मनुष्य अपने जीवन के निमित्त विभिन्न उद्धेश्यों की पूर्ति के लिए व्रत को महत्व देता है।

सरगरा समाज राजस्थान की पावन धरा पर पुष्पित व पल्लवित होने वाला ऐसा समाज है जिसमे कभी अपने आप को जग जाहिर नहीं किया इस समाज के रीति–रिवाज, परम्पराएं, लोकगीत साधु संत अपनी विरासत को सजोए हुए इस माटी को बारम्बार नमन करते है। राजस्थान की माटी वीर और वीरागनाओं के रक्त से रंजित मिट्टी है जिसका कण–कण जौहर की ज्वाला को और रणबांकुरे सरदारों के इतिहास की अमर गाथा को सजोएं हुए है। इस जन्मभूमि को सरगरा समाज बारम्बार प्रणाम करता है। सरगरा समाज राजस्थान के अधिकांश क्षेत्रों में निवास करता है, इसके अलावा

*Corresponding Author: भारती पंवार

गुजरात, मध्यप्रदेश, मुम्बई, दिल्ली, महाराष्ट्र, पुणे आदि क्षेत्रों में रहता है। सरगरा समाज के लोग भारत में जहां भी रहते है समाज के रीति–रिवाजो, व्रत, त्यौहार व सामाजिक लोक जीवन का पालन करते है, ये पूर्ण आस्था व साधना से अपने धर्म को कियान्वित करते है। सरगरा समाज के अन्य स्थानो पर रहने वाले लोगो के रीति–रिवाज, व्रत व आस्था में कुछ बदलाव हो सकता है लेकिन मूल रूप से वह सरगरा समाज की 52 व 84 पट्टियों से जुडे हुए है व आजीविका के कारण अन्य स्थान पर पलायन कर वही के स्थायी निवासी बन गए है।

अतः कुछ बदलाव वहां के देशकाल व परिस्थितियो पर भी निर्भर कर सकते है। सरगरा समाज में व्रत, रीति–रिवाज, त्यौहार, साधु संत तथा लौकिक परम्पराओं का विशेष महत्व है। हिन्दू धर्म में 12 महीनो को अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है। इन 12 महीनो को चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपक्ष, आसोज, कार्तिक, मिग्सर, पौष, माह और फागण कहा जाता है जो अंग्रेजी महीने जनवरी, फरवरी की तरह ही है लेकिन हिन्दू धर्म में इन 12 महीनो की प्रधानता है, जिसे आज की पीढी उच्चारण में नहीं लेती है, सबसे पहले कृष्ण पक्ष यानि अन्धेरा पक्ष फिर शुक्ल पक्ष यानि चांदणा पक्ष कहा जाता है, इसी दो पक्षो व पखवाडो में हर महीने बदलाव होता रहता है तथा इन बारह महीनो के व्रत त्यौहार का अपना अनूठा आनन्द और उल्लास है।

सरगरा समाज में होली, दीपावली, रक्षाबंधन के त्यौहार तो मनाते ही है साथ ही शीतला माता, गणगौर का व्रत, चैत्र व शारदीय नवरात्रा का व्रत, वैशाख पूर्णिमा का व्रत, निर्जला एकादशी का व्रत, श्रावण के सोमवार, तीज, उबछठ, जन्माष्टमी, बछबारस, बाबा की बीज, अनन्त चतुदर्शी कार्तिक व वैशाख का स्नान व प्रमुख व्रत करवा चौथ, यम द्वितीया (भैयादूज) कार्तिक तुलसी विवाह आदि अनेक व्रत पूजा व स्नान का महत्व इनके लोक जीवन में प्रचलित है।

अनन्त चतुदर्शी के समय बिलाड़ा पिचियाक में मैला भरता है वहां पर जागरण का आयोजन किया जाता है तथा सम्पूर्ण भारत से सरगरा समाज के लोग वामन अवतार भगवान श्री हरि विष्णु के अनन्त स्वरूप को अपना आराध्य मानकर अपनी सहभागिता निभाते हैं।

अनन्त चौदस

इस दिन सरगरा समाज में पुरूषो के द्वारा व्रत किया जाता है और इसका उधापन भी किया जाता है।

मारा सतगुरू आया पावणा,
परमेश्वर आया पावणा।
मेरे आनन्द भयो,
मेरे दाता आया पावणा।
उठ कर राजा बलि बोल्या,
मागे सो मिल जावणा।
तीन पावड़ा धरती मांगी,
ओर कछु नही मागणा।
सतगुरू आया पावणा,
जोगेश्वर आया पावणा।

गणगौर का व्रत

हमारे त्यौहार व व्रतो में लोकगीत प्राण है, गणगौर राजस्थान में बड़े ठाठ से मनाया जाता है। [4] गौरी को कन्या का जीवन का आदर्श माना जाता है, उपर्युक्त पति की प्राप्ति के लिए गौरी के व्रत को किया जाता है। इसमें सुहागिने पूजा करती है और लोकगीत गाती है। इसमें ईसर व गणगौर की पूजा सरगरा समाज की महिलाएं करती है।

बाई गवरला बाई,
ईसर वर आया पावणा।
बाबोसा नहीं जाऊ,
ईसर वन माय ऐकला।
बाई गवर ले वी बाबोसा री पोल,
माताजी हे लो मारियो।
बाई गवर ऊबी मामोसा री पोल,
बाबोसा हे लो मारियो।
बाई गवर बाई घर ही पधारयो,
घर भर आया पावणा।

एकादशी व्रत

सरगरा समाज में एकादशी का व्रत बहुत ही महत्वपूर्ण है इस दिन निर्जल रहकर व्रत किया जाता है कहा जाता है कि पाण्डव व द्रोपदी इस एकादशी का व्रत करते थे और व्यास जी के कहने पर भीमसेन इस एकादशी को करते थे इसलिए इसे भीमसेन एकादशी कहा जाता है। इस दिन के व्रत का फल सभी एकादशियो के बराबर होता है। सरगरा समाज की महिलाएं जब ये व्रत करती है तो ये महिलाएं एकादशी पर गीत गाती है।

सरगरा समाज में एकादशी का गीत

रामजी इण रे धरती माय फूलड़ा दोई बड़ा
रामजी एक सूरज न दूजो चाँद,
व्रतो में बडी एकादशी।
रामजी इण रे धरती माय फूलड़ा दोई बड़ा
रामजी एक धरती न इक आसमान
व्रतो में बडी एकादशी
रामजी इण रे धाण निमेजी
रामजी आसमा बरसोई ने मेघ।

एकादशी का अन्य गीतः–

रामजी चाल्या राणो रे वनवास,
सीता जी झेली एकादशी,
रामजी बारह–बारह बरसो सीता,
खोलो नी सीता एकादशी।
रामजी जदे खुलेला एकादशी,

रामजी मारे तुलसी परणाऊ।
मारी जदे खुलेला एकादशी
रामजी तुलसी ने ठाकुर ने परणाओ
मारी जदे खुलेला एकादशी।

तीज का व्रत

सरगरा समाज में तीजणियां तीज का व्रत करती है, सुबह जल्दी उठकर धामौळी करती है ओर झूला झूलती है। गेहूँ, चने, चावल के सातू बनाये जाते है। बहिन बेटियां पूजा करती है, नीम की तलाई देखकर कहानियां सुनती है,चाँद अद्वर्य देकर व्रत खोलती है,
सरगरा समाज में तीज के व्रत के समय तीजणियां ये गीत गाती हैः–

आई आई ऐ मा मारी सावणिया री तीज
माने जी बेली सासरे
देरानीया–जेठानीया ऐ माय रे मारी
झूला झूलण जाए
माणे भलाओ सासू होवणो
हो यो, हो यो माय ऐ मारी
साज दो साज दो
अदमण सो हो/हो यो बाजरो।

इस तरह सरगरा समाज में व्रत सम्बन्धी गीत गाए जाते है जो आम जन में हर्ष व उत्साह पैदा करते है। वास्तव में देखा जाए तो यह व्रत व त्यौहार हमारे जीवन के अंग है जिनके बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं है, ये हमारे संस्कृति के अंग है। अतः हमारी संस्कृति की जो जड़े है उनसे जुडा रहना हमारे लिए आवश्यक है, बिना उनसे जुडे हमारा कोई अस्तित्व नहीं है।

निष्कर्षः

किसी भी समाज को समझने के लिए उसकी संस्कृति को समझना आवष्यक होता है जैसे सरगरा समाज।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. राजस्थानी व्याकरण और साहित्य का इतिहास पद्य श्री सीताराम लालस पृष्ठ 227
2. राजस्थानी व्याकरण और साहित्य का इतिहास पद्य श्री सीताराम लालस पृष्ठ 227
3. राजस्थानी व्याकरण और साहित्य का इतिहास पद्य श्री सीताराम लालस पृष्ठ 227
4. राजस्थानी व्याकरण और साहित्य का इतिहास पद्य श्री सीताराम लालस पृष्ठ 240
5. सरगरा समाज की महिलाओं से लोकगीतों का संकलन किया गया।
6. सरगरा समाज लोकगीतों का ऑनलाइन, ऑफलाइन ऑडियो विडियों का संग्रह किया गया।
7. सरगरा समाज के लोगो द्वारा विभिन्न राज्यों से जैसे राजस्थान, दिल्ली, मुम्बई, गुजरात, महाराष्ट्र, पुणा, मध्य प्रदेश आदि से लोक संस्कृति की जानकारी प्राप्त की गई।